Epitome Journals
International Journal of Multidisciplinary Research

साहित्यिक अनुसंधान और कलापक्ष

डॉ. विजय शिंदे
देवगिरी महाविद्यालय, औरंगाबाद - 431005 (महाराष्ट्र).
ब्लॉग - साहित्य और समीक्षा *डॉ. विजय शिंदे*

Abstract

यह निबंध, लेख या आलेख विश्वविद्यालय के अनुसंधान की स्थितियों पर प्रकाश डालता है; जो एक व्यवसाय के तहत उत्पादन करते जा रहा है। अंदर-बाहर को जानता हूं; अतः लेखन पद्धतियों को जैसे स्वीकारता हूं, वैसे नकारता भी हूं। चिंतक, समीक्षक अपनी बातों को डंके की चोट पर रखता है और उन मतों पर बना भी रहता है। उसके लिए किसी दूसरे व्यक्ति के 'संदर्भों' की आवश्यकता नहीं। असल समीक्षा, विवेचना वहीं है जो अपने-आप में परिपूर्ण हो। अपनी कमजोर बातों को पुष्टि प्रदान करने के लिए दूसरों के संदर्भ उठाना अपनी बात की कायमता पर संदेह निर्माण करना है। अतः इस आलेख में 'रिसर्च पेपर' के इथिक्स तोड़ रहा हूं। इथिक्स के तहत काम करने का समय गुजर चुका है, तो क्यों न खुलकर बेबाकी से लिखा जाए। शोध आलेख की परिधि के बाहर का शोध शायद ही भलाई की बात करे। भूले-बिसरे शोधार्थी अनुसंधात्मक तकनीकों के पश्चात् उपाधियां पाकर साहित्य के कलापक्ष को अनुसंधान का विषय

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved

बनाकर कन्फेशन करे। कन्फेशन तभी पूरा होता है जब उसके स्वीकृति उपरांत दुबारा उसी गलती को न दोहराए। अर्थात् 'उपाधि अनुसंधान' के दौरान कलापक्ष पर कोई गौर नहीं किया कोई बात नहीं परंतु उपाधि प्राप्ति के पश्चात् अपने-आपको किसी भी एक विषय में माहिर बनाना जरूरी है। उसमें 10 % भी कलापक्ष पर मेहनत करने लगे तो साहित्य और अनुसंधान का भला होगा। अनुसंधान का आरंभ ही अगर कलापक्ष से जुड़कर हो रहा है या विषय पक्ष के समकक्ष कलापक्ष के साथ हो रहा है तो सोने पर सुहागा माना जाएगा।

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EJ, All rights reserved